Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for BA part 2, paper 3

Topic:– पालों का राजनीतिक इतिहास (Political History of the Palas)

पाल-शासकों की उत्पत्ति (जाति) निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। रामपालचरित के लेखक संध्याकरनन्दी तथा तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ के अनुसार पालशासक क्षत्रियवंशी थे; परंतु आर्यमंजुश्रीमूलकल्प में इस वंश के संस्थापक को शूद्र बताया गया है। तारानाथ के अनुसार गोपाल को माता का जन्म क्षत्रियकुल में हुआ था तथा एक वृक्ष देवता के संसर्ग से गोपाल का जन्म हुआ था। तारानाथ से मिलती-जुलती कहानी का उल्लेख तिब्बती इतिहासकार बुस्तन भी करता है। अष्टसहंसिकाप्रज्ञापारमित नामक बौद्ध ग्रंथ पर धर्मपाल के समय में हरिभद्र द्वारा लिखित टीका में धर्मपाल को "राजमटादिवंशपतित (राज्ये राजभटादिवंशपतित श्री धर्म- पालस्य वै)" बताया गया है। इसका अर्थ किसी राजा के सैनिक पदाधिकारी अथवा खड्गवंश राजा राजभट से संबद्ध लगाया गया है। खलीमपुर अभिलेख में गोपाल की रानी देद्दादेवी कहा गया है जिसके आधार पर कुछ विद्वान उसे समतट में भद्रनामान्तवंश में उत्पन्न मानते हैं। कुछ विद्वान ने पालों को सूर्यकूल और समुद्रकुल से जोड़ने का प्रयास किया है पालों के मूल निवास स्थान का प्रश्न भी विवादास्पद है। संध्याकरनन्दी वीरेंद्र का उल्लेख पालों की 'जनकभू' या पितृभूमि के रूप में करता है। लामा तारानाथ के अनुसार गोपाल का जन्म पुंड्रवर्धन के पास हुआ था तथा उसे भंगल या बंगाल का राजा निर्वाचित किया गया था। अतः गोपाल की जन्मभूमि वरेंद्री होते हुए भी गोपाल ने अपने शासन का आरंभ दक्षिणी बंगाल या बंग में किया। कुछ विद्वान राष्ट्रकूट अभिलेखों के आधार पर, जिसमें धर्मपाल को 'गौड़ाधिपति' कहा गया है, गौड़ को ही पालों का आदिनिवास मानते हैं। संभवतः, पाल आरंभ में किसी प्राचीन राजवंश से संबद्ध नहीं थे; परंतु राजसत्ता की प्राप्ति के पश्चात उन्होंने अपना संबंध सूर्यवंशी क्षत्रियों या समुद्रकुल से स्थापित किया। उनका आदि निवासस्थान पुंड्रवर्धन (बोगरा जिला) या बरेंद्री (पूर्व बंगाल) था। इस वंश का संस्थापक संभवतः कोई सामंत था। बंगाल की राजनीतिक अव्यवस्था का अंत करने के लिए सभी सरदारों एवं सामंतों ने गोपाल की प्रतिभा से प्रभावित होकर, उसे ही अपना राजा बहाल किया। इसी के वंशज पाल शासक के नाम से विख्यात हुए। गोपाल के राजपद पर निर्वाचन की पुष्टि तारानाथ के विवरण तथा धर्मपाल के खलीमपुर-ताम्रपत्र अभिलेख से होती है, जिसमें कहा गया है कि बंगाल में व्याप्त मत्स्यन्याय का अंत करने के लिए गोपाल को राजा निर्वाचित किया गया। इस अभिलेख के अनुसार गोपाल के पिता का नाम वप्यट और पितामह का नाम दयितविष्णु था।

गोपाल (750 से 770 ई०) राजा बनने के पश्चात गोपाल ने सर्वप्रथम बंगाल में व्याप्त अव्यवस्था को समाप्त किया तथा शांति एवं सुव्यवस्था स्थापित की। गोपाल का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य था पालों की

शक्ति का विस्तार करना। उसने पांड्य, बंग, अंग, मगध और कामरूप पर अधिकार कर अपने राज्य की सीमा विस्तृत की। देवपाल के मुंगेर ताम्नफलक अभिलेख में गोपाल को समुद्रपर्यंत पृथ्वी का विजेता बताया गया है; परंतु इन विजयों की पुष्टि के लिए स्पष्ट प्रमाण नहीं है। गोपाल बौद्धधर्म से प्रभावित था। इसलिए मगध विजय के पश्चात उसने बिहारशरीफ के निकट ओदन्तपुरी विहार की स्थापना की (प्रो० योगेंद्र मिश्र इस विहार की स्थापना का श्रेय स्थानीय निवासियों को देते हैं, गोपाल या किसी अन्य राजा को नहीं)। उसने नालंदा में भी एक विहार बनावाया। तारानाथ के अनुसार गोपाल ने 45 वर्षों तक तथा आर्यमंजुश्रीमूलकल्प के अनुसार 27 वर्षों तक शासन किया; परंतु अधिकांश आधुनिक विद्वान गोपाल की तिथि 750 से 770 ई० मानते हैं।

धर्मपाल (770 से 810 ई०) आरंभिक पाल शासकों में सबसे अधिक योग्य एवं शक्तिशाली राजा धर्मपाल हुआ। उसी के समय में कन्नौज पर स्वामित्व के लिए त्रिदलीय संघर्ष आरंभ हुआ। धर्मपाल ने मगध, वाराणसी और प्रयाग पर अधिकार कर कन्नौज पर आक्रमण किया। कन्नौज के राजा इंद्रायुध को गद्दी से हटाकर अपनी संरक्षता में उसने चक्रायुध को कन्नौज का शासक बनाया। खलीमपुर-ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार उसने कन्नौज में एक दरबार किया, जिसमें भोज (बरार), मत्स्य (जयपुर), मद्र (पंजाब), कुरु (थानेश्वर), यदु (मथुरा या द्वारका), यवन (सिंध का अरब शासक), अवन्ती (मालवा), गांधार (उत्तर-पश्चिमी सीमा) तथा कीड़ (काँगड़ा) के शासकों ने भाग लिया एवं उसकी सार्वभौमिकता स्वीकार की।पाटलिपुत्र में भी एक दरबार का आयोजन किया। अब वह वस्तुतः समस्त उत्तरी भारत का स्वामी (उत्तरापथस्वामी) बन गया। 11वीं शताब्दी का एक गुजराती कवि सोड्ढल उदयसुंदरीकथा में उसे उत्तरापथस्वामी की उपाधि से विभूषित करता है।धर्मपाल की यह विजय स्थायी नहीं रही। कन्नौज के स्वामित्व के लिए पहले उसका संघर्ष गुर्जर प्रतिहार राजा वत्सराज तथा बाद मे नागभट्ट द्वितीय से हुआ, जिसमें दोनों बार धर्मपाल पराजित हुआ, परंतु दोनों ही बार गुर्जर-राष्ट्रकूट-संघर्ष का लाभ उठाकर उसने अपनी शक्ति पूर्ववत बना ली। धर्मपाल एक योग्य शासक था। उसने पश्चिम में पंजाब से पूर्व में बंगाल तक, उत्तर में हिमालय से दक्षिण में बरार तक अपनी शक्ति स्थापित की तथा महाराजाधिराज, परमेश्वर और परमभट्टारक जैसी उपाधियाँ धारण कीं। अपने शासन के अंतिम चरण में उसे संभवतः तिब्बत के राजा की अधीनता भी स्वीकार करनी पड़ी। ऐसा तिब्बती स्रोतों से विदित होता है। धर्मपाल का वास्तविक नियंत्रण बिहार बंगाल तक ही रहा, उत्तरी भारत के शेष भागों में गुर्जर प्रतिहार की सत्ता सुदृढ़ हो गई। बौद्धधर्म से प्रभावित होकर उसने परमसौगत की उपाधि भी धारण की। वह एक योग्य प्रशासक भी था। नारायणपाल के भागलपुर अभिलेख में उसे उचित कर लगाने वाला अथवा सबके साथ समान व्यवहार करनेवाला (समकरः) बताया गया है। यद्यपि वह बौद्धधर्म से विशेष रूप से प्रभावित था तथापि वह सभी धर्मो का आदर करता था। खलीमपुर अभिलेख में उसे सभी धर्मों का आदर करनेवाला बताया गया है। उसका मंत्री ब्राह्मण गर्ग था। उसने बौद्ध विद्वान हरिभद्र को भी संरक्षण दिया। उसने विक्रमशिला और सोमापुर विहारों की स्थापना की, बोधगया में चतुर्मुख महादेव की मूर्ति स्थापित करवाई तथा नालंदा विश्वविद्यालय को उदारतापूर्वक अनुदान दिया।

देवपाल (810 से 850 ई०) - देवपाल का समय पाल साम्राज्य के चरमोत्कर्ष का युग था। उसने आक्रामक नीति द्वारा अपने पिता से विरासत में पाए हुए साम्राज्य को सुरक्षित रखा तथा इसका विस्तार भी किया। उसके विजय-अभियानों की जानकारी मुंगेर, भागलपुर तथा बदल अभिलेखों से मिलती है। उसने गुर्जर प्रतिहार नरेश रामभद्र तथा मिहिरभोज को पराजित किया, उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में विंध्य तक आक्रमण किया, उत्कलों को निर्मूल किया, हूणों के गर्व को चूर किया तथा द्रविड़ और गुर्जर राजाओं की आत्म-प्रवंचना को विखंडित किया। उसने तिब्बत एवं राष्ट्रकूटों अथवा पांड्य राजा श्रीभार श्रीवल्लभ से भी युद्ध किया। अरब यात्री सुलेमान देवपाल को राष्ट्रकूटों तथा गुर्जरों से अधिक शक्तिशाली राजा मानता है। संभवतः, अपने शासन के अंतिम चरण में उसे मिहिरभोज से पराजित (843 से 850 ई० के मध्य) होना पड़ा। देवपाल के सैनिक अभियानों में उसके भाई जयपाल ने तथा उसके मंत्री दर्भपाणि और केदार मिश्र ने भी सहायता की। देवपाल ने जावा एवं सुमात्रा के शासकों के साथ भी मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए। देवपाल बौद्धधर्म का पुनःप्रतिस्थापक भी माना जाता है (तारानाथ के अनुसार) । उसने नालंदा-महाविहार को अनेक दान दिए। उसकी अनुमति से सुवर्णद्वीप के शैलेंद्रवंशी राजा बलपुत्रदेव ने नालंदा में एक विहार बनवाकर इसे पाँच गाँव दान में दिए। देवपाल पाल वंश का महानतम विजेता था। उसके समय में पाल सत्ता का विस्तार पूर्व में कामरूप, दक्षिण में कलिंग तथा पश्चिम में विंध्य और मालवा तक हुआ। उसने द्रविड़ प्रदेश तथा तिब्बत (कम्बुज) की सेना को भी पराजित किया। गुर्जर और राष्ट्रकूट उसके समय में बंगाल-बिहार पर सीधा आक्रमण करने का साहस नहीं जुटा सके। उसने अपने मंत्रियों की सहायता से प्रशासन भी व्यवस्थित किया। धर्मपाल के समान देवपाल भी बौद्धधर्म का संरक्षक था। तारानाथ उसे बौद्धधर्म का पुनर्संस्थापक मानता है। उसने बौद्ध विहारों को उदारतापूर्वक दान दिया। उसने भी धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। घोसरांवां (बिहार) से प्राप्त एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने नग्रहार निवासी एक ब्राह्मण (इंद्रगुप्त) को नालंदा महाविहार का प्रधान आचार्य नियुक्त किया।

प्रथम साम्राजा का